बस्तर की जनजातीय संस्कृति

डॉ. रामचंद साहू
Ram.anthro123@gmail.com
पेपर- जनजातीय विकास, यूनिट- 01

माड़िया जनजाति सांस्कृतिक विवरण

संक्रेद्रण :- बस्तर, कोण्डागाँव, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, सुकमा, बीजापुर

बसाहट :- विरल

वस्त्र विन्यास :- पुरूष- लंगोटी, पंछा, बंडी

स्त्रियां- लुगड़ा, आकर्षण जूड़ा

आभूषण :- हमेल, सूता, फूली, पोतमाला, कड़ा, कौड़ी

विवाह प्रथा :- दूध लौटावा प्रथा

खानपान :- कोदो कुटकी, चॉवल-भात, मड़िया पेज, मुर्गी, मछली, बकरी, सुअर, चापड़ा, बास्ता, लांदा, सल्फी, महुआ रस, छिंदरस

आजीविका :- पेंदा खेती, वनोपज संग्रहण, शिकार

देवी-देवता :- भीमा देव, बूढ़ादेवा, बूढीमाई, मुड़िया देव

पर्व :- बेंजी (धान) पंडुम, मरका (धान) पंडुम, बीज पंडुम, नवा खाई, हरेली

नृत्य :- ककसाड़ (गौर) नृत्य

युवागृह :- गोटुल (सांस्कृतिक पाठशाला)

वनों से संबंध :- दैनिक जीवन की आवश्यकता की पूर्ति, आजीविका, जन्म, विवाह, मृतक संस्कार, प्रत्येक पर्व उत्सव के लिए वनों पर निर्भर है। वनों की सुरक्षा, विनाशविहीन विदोहन की कला पारम्परिक रूप से विद्यमान है इसी ज्ञान के अनुसार ये वृक्षों, पशु एवं पक्षियों की सुरक्षा करते है।

-

भतरा जनजाति सांस्कृतिक विवरण

संक्रेद्रण :- बस्तर, कोण्डागांव, दंतेवाड़ा, सुकमा

बसाहट :- विरल

वस्त्र विन्यास :- पुरूष- धोती बंडी,

महिला-लुगा, माली

आभूषण :- पयडी, बाँदरा, चिपमाला, खिनवा

विवाह प्रथा :- सहजाति विवाह प्रथा

खानपान :- चावल, कोदो कुटकी का भात, पेज, बकरा, मछली, मुर्गी, बास्ता, चापड़ा, सल्फी, महुआ रस

आजीविका :- कृषि, वनोपज संग्रहण, बाजार में सब्जी बेचना

देवी-देवता :- ठाकुर देव, बूढ़ा बाबा, दंतेश्वरी देवी, बूढ़ी माता, तेलगीन माता, परदेशीन माता

पर्व :- अमुस तिहार, नवाखाई, भीमा-भमिन जावा, मंडई

नृत्य :- डंडरी नृत्य, परब नृत्य

लोकगीत :- चैत परब, कोटनी, लाठिया भाजी, भतरानाट

वनों से संबंध :- सरगी सिवना भतरा जीवना जन्म, विवाह, मृतक संस्कार एवं प्रत्येक त्यौहार में अलग अलग वृक्षों की अलग उपयोगिता एवं गोत्र अनुसार वृक्षों, पक्षियों एवं जानवरों की पूजा एवं संरक्षण किया जाता है।

मुरिया जनजाति सांस्कृतिक विवरण

संक्रेद्रण:- बस्तर, नारायणपुर, कोण्डागांव

बसाहट :- विरल

वस्त्र विन्यास :- पुरूष- ओलना, तुआल, बंडी, बनियानीपागा, लोहगी

महिला- पाटा, लुगा, धोती, खोसा

आभूषण :- फूली, सूता, बारी, पयड़ी, बाहटा, धान माला, लुड़की, चिपमाला

विवाह प्रथा :- गुड़ामोल (दुध लौटावा प्रथा)

खानपान :- चाउर भात, मड़िया का पेज, चाउर पेज, बकरी, मुर्गी, मछली, चापड़ा, बास्ता

आजीविका :- वनोपज संग्रहण, शिकार, कृषि, मजदूरी

देवी-देवता :- डोकरा देव, मावली माता, परदेशीन माता, जलकी माता, बोहरेया मोता

पर्व :- मड़ई, अमूस, नुआखानी, दियाली, माटी देव, चरू देव उठानी

नृत्य :- परब नाच, ठुड़का मान्दर, घोड़न्दी, डण्डार नाच, उड़जा नाच

वनों से संबंध :- सरगी पत्ता का दैनिक जीवन में उपयोग, महुआ एवं सरगी का कांदा विवाह में उपयोग, जंगल से छाती, बोड़ा अन्य खाद्य सामग्री का उपयोग आदि होता है।

मुंडा जनजाति सांस्कृतिक विवरण

संक्रेद्रण :- बस्तर

बसाहट :- विरल

वस्त्र विन्यास :- पुरूष- लुंगी, बनियान, तुआल, हाथ में खाडू

स्त्रियां- लुगा, माली:-

आभूषण :- पैचड़ी (पैरपट्टी), फुली, चिपमाली

विवाह प्रथा :- गुडामेल (दूध लौटावा प्रथा)

खानपान :- चावल, कोदो कुटकी का भात, पेज, बकरा, मछली, मुर्गी, बास्ता, चापड़ा, सल्फी, महुआ रस

आजीविका :- कृषि, मजदूरी एवं वनोपज संग्रहण

देवी-देवता :- डोकरी देव, डोकरा देव, मां दन्तेश्वरी

पर्व :- माटी त्यौहार, अमुस त्यौहार, नवाखानी, दियारी त्योहार

नृत्य :- अन्नमदेव नृत्य, मां दंतेश्वरी नृत्य, मुण्डाबाजा नाचा

वनों से संबंध :- आजीविका एवं दैनिक आवश्यकता के लिए वनों पर निर्भरता, सरई, आम, इमली, बांस, तेंदूपत्ता, गोंद आदि का संग्रहण करते है। नीम एवं बेल का देव झण्डा बनाया जाता है ।

हलबा जनजाति सांस्कृतिक विवरण

संक्रेद्रण :- बस्तर, कोण्डागांव, नारायणपुर, कांकेर, दंतेवाड़ा, बीजापुर, सुकमा

बसाहट :- विरल

वस्त्र विन्यास :- पुरूष- धोती, पटका, बंडी, कुड़ता, सलुका, पागा, आदि

स्त्रियां - साड़ी, ब्लाउज आदि

आभूषण:- पुरूष - काठू, मूंदी, कान में बाली, कमर में करधन, सुता माला, कारी माला

महिला- लुरीक, कर्णफूल, खिलवा, सुतिया, बन्धा, फुली, पैरपटी, चिपमाला, ककवा, बाहुटा नागफोटी, गोदना कारीमाला, खोटला, पैयरी।

विवाह प्रथा :- टोटम व्यवस्था से होता है।

खानपान :- चाउर, कोदो कुटकी, मंड़िया, जोंधरा, उड़द, मुंग, मुर्गी, अरहर, चापड़ा चटनी, मंहुआ, जंगली कंद-मूल, फल, बकरी, साग-सब्जियां, सल्फी, ताड़ी, महुआ रस, बास्ता

आजीविका :- वनोपज संग्रहण, चांवल (धान) का चिवड़ा बेचना बोबो, गुड़िया खाजा, कृषि, मजदूरी

देवी-देवता :- मावली, परदेशीन, इंतेश्वरी, बौहरिया, भीमादेव, तारू बेताल, धारनी-भण्डारनी, बारा धावनी, डांड बैजारिन, कुडूम तुला, बारा, भुजा (आंगा देव) नरसिंग नाथ, पीलापाट, भेरम, हिंगलाजिन, भंगाराममाई, केवराभुड़िंन, माटीराव, गांदीराव, राजाराव।

पर्व :- माटी - वित्तील तिहार, गुना, अमुस तिहार, कौल्ता, नयाखाई तिहार, दियारी तिहार

नृत्य :- गोड़दी, छेर, छेरा एवं अन्य जनजातियों के साथ सामूहिक नृत्य

वनों से संबंध :- वनों से फल, फुल, कंदमूल, आम, सरगी, छिंद, पीपल, चार, कुड़ई पान, इमली, आंवला, महुआ, तिखुर, हर्रा, बेहड़ा, सल्फी का जीविकोपार्जन, त्यौहारों एवं सभी संस्कारों में उपयोग करते है

धुरवा जनजाति सांस्कृतिक विवरण

संक्रेद्रण :- बस्तर, सुकमा, दंतेवाड़ा से उड़ीसा सीमा तक कांगेर नदी व कोलाब नदी के तटीय क्षेत्रों तक

बसाहट :- विरल

वस्त्र विन्यास :- पुरूष- धोती का लंगोट, बंदी तुआल, पागा, कुर्ता

स्त्रियां - पाटा एवं सुंदरमनी धोती

आभूषण :- पुरूष - कांठू, मुंदी, मुंगिया माला

महिला- चुड़ी, बहुटा, रिंग बहुटा, काठू, किनवा, पैसा मुंदी, मुंगिया माला, चिपमाला, कोसामाला, बांस की कंघी से केस सज्जा।

विवाह प्रथा :- टोटम व्यवस्था से होता है।

खानपान :- चांवल, कोदो-कुटकी, मंडिया एवं जोंधरा पेज, चापड़ा, महुआ एवं जंगली कंदमूल, फल, मुर्गी, मछली, बकरी, सुअर

आजीविका :- वनोपज संग्रहण, शिकार, बांस निर्मित वस्तुओं का विक्रय, कृषि, मजदूरी

देवी-देवता :- पितरदेव, कासर, रातमाय, सोनकुंआर बनकुं आर, चितंराराव, पडराराव, बास्ताबुदीन, मावली, भैरम, हिंगलाज, शितला, बंजारीन, डोंगरदेव, पिला भैरम

पर्व:- माटी - वित्तील तिहार, गुना, अमुस तिहार, कौल्ता, नयाखाई तिहार, दियारी तिहार

नृत्य :- गुरगाल, धुरवा डंडारी, मंडई नृत्य, बीरली, गोंडदी, गंवर, छेरता, उलेर, धुरवा परब, गोबर बोहडानी, मानकुल, बड़गी, चूरचा (विवाह) नृत्य

वनो से संबंध :- वनो से फल, फुल, कंदमूल, आम, इमली, आंवला, महुआ, तिखुर, हर्रा, बेहड़ा, सल्फी, कुड़ई पान का उपयोग किया जाता है। बांस का सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन में विशेष महत्व है।

दोरला जनजाति सांस्कृतिक विवरण

संक्रेद्रण :- बस्तर, बीजापुर, सुकमा

बसाहट :- विरल

वस्त्र विन्यास :- पुरूष- धोती, पंछा, बंडी, बनियान

महिला- लुगड़ा

आभूषण :- पायल, चूड़ी, माला, सुर्रा, फुल्ली, खिवा, गोदना

विवाह प्रथा :- सूक प्रथा, दुध लौटावा प्रथा

खानपान :- चावल, कोदो-कुटकी का भात, पेज, मुर्गी, मछली, बकरा, चापड़ा चटनी, महुआ, ताडी रस

आजीविका :- वनोपज संग्रहण, शिकार, कृषि, मजदूरी

देवी-देवता :- मुत्तेलम्मा माता, पोतराज, मुडपुलम्मा, गंगनम्मा, हिंगवानी, ममकिरिया देव, जिबोकाटी देव

पर्व :- जीरापण्डुम, कोल पण्डुम, चिकुर, बीज पण्डमु, पारद, इकीम पण्डमु, ताड़ीम पण्डुम

नृत्य :- गऊर सिंह नृत्य, पेण्डुल पाटा, कोडता पाटा, कुर्रम पाटा, आता पाटा

वनो से संबंध :- वनोपज संग्रहण आजीविका का प्रमुख आधार है । सभी प्रकार के वनस्पतियों का उपयोग दैनिक जीवन में विभिन्न पर्वों में किया जाता है, विशेष महत्व ताड़ वृक्ष का है घर बनाने में इसके तना, पत्ती का उपयोग होता है तथा रस एवं कंद इनके आहार है।